प्राक्कथन

प्रारम्भ से ही मेरी रुचि हिन्दी भाषा, साहित्य एवं हिंदी पत्रकारिता के प्रति रही है। मैं हमेशा हिंदी भाषा का सम्मान किया हूँ और करता रहूंगा। इतना ही नहीं मैंने अपने मेहनत से आज तक हिंदी भाषा व साहित्य के प्रति अपनी रूचि को बरकरार रखा हूँ। साहित्य से मानव संस्कारों का विकास होता है। साहित्य की विधाओं में बच्चों से लेकर बुजुर्गों के मन को चुम्बकीय गुणों से बांध रखने की शक्ति है। मैं भी साहित्य के इस शक्ति से अछूता नहीं रहा।

वर्तमान जीवन की आवश्यकताओं, अनिवार्यताओं, उपलब्धियों, परिघटनाओं एवं विसंगतियों को सही ढंग से प्रकट करने का कार्य आज जिस माध्यम के द्वारा अधिकार पूर्वक सम्पन्न हो रहा हैं वह माध्यम है पत्रकारिता।

यह चुनौती भरा कार्य पत्रकारिता ही कर सकती है। यदि हम ऐसा कहे तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। वास्तव में यह ऐसा सूत्र है जो मानव और समाज को विश्व से जोड़ता है। इसे लोकतंत्र के 'चौथे स्तंभ' की संज्ञा दी जाती है। पत्रकारिता लोकतंत्र का प्रहरी है। अतः पत्रकारिता एक गंभीर एवं उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य है। इसका लक्ष्य एक आदर्श समाज की स्थापना करना है।

पत्रकारिता अभिव्यक्ति की मनोरम कला भी है, इसका कार्य जनता तथा जन-नेताओं के समक्ष लोक कल्याण संबंधी कार्यों की सूची प्रस्तुत करना है। समाचार पत्र दैनिक जीवन का अनिवार्य अंग है। यह प्रबुद्ध पाठकों के लिए एक ऐसा दर्पण है जिसकी सहायता से वे विश्व की गतिविधि, स्वराष्ट्र के उत्थान-पतन तथा क्षेत्र विशेष की ज्वलंत समस्याओं से सुपरिचित होते हैं। समाज का वास्तविक प्रतिबिंब समाचार पत्रों में पाया जाता है। समाचार पत्रों में सत्यम्, शिवम्, सुंदरम् की आराधना होती है। हिंदी पत्रकारिता का वर्तमान स्वरूप किसी भी तरह से अपनी पूर्व पत्रकारिता से कमतर या कमजोर दिखाई नहीं पड़ता।

स्वतंत्रता से पूर्व हिंदी पत्रकारिता विषय केंद्रित थी। स्वतंत्रता प्राप्त करने की दिशा में एक साधन के रूप में कार्य किया, परंतु आज चुनौती दूसरी है। समृद्ध राष्ट्र की कल्पना और उसको मूर्त रूप प्रदान करना है।

आधुनिक युग की बौद्धिकता एवं विवेकयुक्त दृष्टि ने इसे मात्र मनोरंजन, भोजनोंपरांत नींद लेना अथवा यात्रा आदि में टाइमपास मनोरंजन की हल्की-फुल्की 'चीज' जैसी स्थिति से उठाकर चिंतन और प्रेरणा की विधा के रूप में प्रतिष्ठित कर उसके विकास और समृद्धि के नवीन द्वार उन्मुक्त किए हैं। अपने स्तर से कई पत्र-पत्रिकाओं ने इसमें अपना योगदान दे रहे हैं। इनमें 'हंस' पत्रिका की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। 'हंस' पत्रिका ने अपने विशेषांकों के माध्यम से समाज को खासकर दलित, पिछड़ा, अल्पसंख्यक और महिला को एक नई दिशा दी है। और हिंदी साहित्य में स्त्री, दलित, पिछड़ा और अल्पसंख्यक को स्थापित किया हैं। प्रेमचंद के 'हंस' ने साहित्य को प्रतिष्ठा दी और उसी परंपरा को राजेंद्र यादव ने कायम रखा है।

15-04-2017 को विश्वविद्यालयी शोध समिति की बैठक में मेरा शोध शीर्षक 'हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में हंस और राजेंद्र यादव : एक अनुशीलन' स्वीकार कर लिया गया। मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। इस सबका सम्पूर्ण श्रेय मेरे गुरुवर श्रद्धेय डॉ मायाप्रकाश पाण्डेय व प्रो शिवप्रसाद शुक्ल सर को जाता है। मैं उनका हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ।

सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने शोध-प्रबंध को निम्नलिखित विवरण के अनुसार वर्गीकृत करके कार्य पूरा किया है। जिससे विषय का प्रतिपादन भली प्रकार सम्भव और सम्यकरूपेण हो सके।

शोध-प्रबंध का विवरण :

प्रस्तुत शोध-प्रबंध को छः अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक अध्याय के अन्त में निष्कर्ष तथा सन्दर्भ सूची दी गई है। सभी अध्यायों के अंत में निष्कर्ष के रूप में

उपसंहार दिया गया है। उसके बाद ग्रंथानुक्रमणिका के अंतर्गत आधार-ग्रंथ, संदर्भ-ग्रंथ, कोश-ग्रंथ तथा पत्र-पत्रिकाओं की सूची को आकारांतक्रम में दी है।

प्रथम अध्याय : हिंदी पत्रकारिता का उद्भव और विकास

शोध-प्रबंध के प्रथम अध्याय के अंतर्गत 'हिंदी पत्रकारिता के उद्भव एवं विकास' पर हमने प्रकाश डाला है। हिंदी पत्रकारिता का अर्थ और परिभाषा, हिंदी पत्रकारिता का जन्म और विकास, हिंदी पत्रकारिता का उद्देश्य और दायित्व, हिंदी पत्रकारिता का स्वरूप और महत्व, पत्रकारिता के सिद्धांत, हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र, हिंदी पत्रकारिता का अतीत और वर्तमान, पत्रकारिता का भविष्य के बारे में विस्तृत विवेचना की गई हैं। हिंदी पत्रकारिता के सभी पहलुओं पर चर्चा किया गया है। और अंत में 'हंस' पत्रिका के बारे में भी जानकारी दी गई है। अध्याय के अंत मे निष्कर्ष भी दिया गया है साथ ही साथ सन्दर्भ ग्रंथ भी दिया गया है।

द्वितीय अध्याय : हिंदी पत्रकारिता : हंस और साहित्य

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत 'हिंदी पत्रकारिता : हंस और साहित्य' के बारे में विस्तृत चर्चा की गई है। इसमें 'हंस' के उद्भव जिसमें प्रेमचंद जी के बारे में बताया गया है कि किन परिस्थितियों में प्रेमचंद ने हंस को शुरू किया। उन्हें कितना संघर्ष करना पड़ा। 'हंस' के जन्म से लेकर जब तक प्रेमचंद इसके संपादक रहे तब तक के बारे में विस्तार से चर्चा किया गया है। प्रेमचंद जी के देहावसान के बाद 'हंस' को आगे ले जाने की जिम्मेदारी शिवरानी देवी के कंधों पर आ जाती है। शिवरानी देवी अपने मेहनत और कुशल नेतृत्व में 'हंस' को आगे बढ़ाती हैं। उसके बाद जैनेन्द्र जी ने 'हंस' के संपादक की जिम्मेदारी ले ते है। हंस को आगे बढ़ाते हैं। जैनेन्द्र जी किसी कारण से दिल्ली चले जाते है। फिर वापस नहीं आ पाते है। अब मजबूरी में 'हंस' के संपादन की जिम्मेदारी श्रीपतराय के कन्धों पर आ जाती है। कुछ दिनों बाद अमृतराय इलाहाबाद से शिवदान सिंह चौहान को बनारस

'हंस' के संपादन की जिम्मेदारी सम्भालने के लिए भेजते है। 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान शिवदान जी जेल चले जाते है। अब 'हंस' के संपादन की जिम्मेदारी अमृतराय आपने हाथों ले लेते है। अमृतराय ने 'हंस' को अपने तरीके से आगे बढ़ाते हैं। उन्हें तत्कालीन लेखकों का भी भरपूर साथ मिलता है। अमृतराय ने कई देशी-विदेशी लेखकों पर भी विशेष सामग्री 'हंस' में प्रकाशित किया। 1952 के बाद मजबूर होकर 'हंस' को बंद करना पड़ा। 1956 में अमृतराय ने बहुत परिश्रम से 'हंस' का एक विशेषांक निकाला लेकिन जो प्यार पाठकों का 1952 तक 'हंस' को मिलता आया था वो इस अंक को नहीं मिला और अन्ततः अमृतराय भारी मन से 'हंस' को हमेशा के लिए बंद कर दिया।

तृतीय अध्याय : राजेन्द्र यादव का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

शोध-प्रबंध के तृतीय अध्याय में राजेंद्र यादव के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तार से चर्चा की गई है। व्यक्तित्व के अंतर्गत राजेंद्र जी के जन्म, बचपन, माता-पिता, शिक्षा, पारिवारिक परिचय, संस्कारगत प्रभाव, अभिरुचियाँ, वैवाहिक जीवन, पिता के रूप में, वसूलों के पक्के, निःस्वार्थी व्यक्तित्व, प्रचार-प्रियता से दूर रहना, जनवादी लेखक संघ तथा राजेंद्र यादव आदि पहलुओं पर विचार किया गया है। राजेन्द्र जी शारिरीक विकलांगता के बाद भी अपने लेखन के प्रति कितने ईमानदार थे इसका पता उनके उपन्यासों (सारा आकाश, उखड़े हुए लोग, शह और मात, कुलटा, अनदेखे अनजाने पल व मंत्रविद्ध) तथा कहानियों (देवताओं की मूर्तियां, खेल-खिलौने, जहाँ लक्ष्मी कैद है, छोटे-छोटे ताजमहल, किनारे से किनारे तक, ढोल व वहां पहुँचने की दौड़) से सहज ही लगाया जा सकता है। नई कहानी के प्रमुख सूत्रधार राजेंद्र यादव अपनी कहानियों में समस्या और मनोविश्लेषण को अपनाते हुए भी व्यक्ति और परिवेश की उपेक्षा नहीं होने दी। राजेंद्र जी के व्यक्तित्व का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष अपनी बात डंके की चोट पर कहना, जिसके कारण अक्सर विवादों से घिरे रहते थे।

चतुर्थ अध्याय : राजेंद्र यादव का योगदान

शोध-प्रबंध के चतुर्थ अध्याय में राजेंद्र यादव का योगदान विषय पर चर्चा की गई है। इसमें राजेन्द्र यादव का पत्रकारिता के क्षेत्र में योगदान एवं 'हंस' के विकास में योगदान। राजेंद्र यादव का पत्रकारिता के क्षेत्र मत्वपूर्ण योगदान है। उनकी साहित्यिक रचनाओं ने समाज को अपनी नजरिया बदलने और सोचने पर मजबूर किया। उनके उपन्यास और कहानियों पर फ़िल्म और धारावाहिक बनाई गई। राजेन्द्र यादव का 'हंस' के विकास में भी अतुलनीय योगदान है। 1986 में 'हंस' को पुनः प्रकाशित कर हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता को जनमानस की पत्रिका बना दिया। 'हंस' में प्रकाशित उनके संपादकीय हमेशा ज्वलंत मुद्दों पर होते थे। और 'हंस' पत्रिका के चर्चा का कारण बनते थे। जो आज भी संजय सहाय के कुशल नेतृत्व में जारी है। राजेन्द्र यादव ने 'हंस' को ही क्यों चुना, 'हंस' शुरू करने में किस प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इन कठिनाइयों से संघर्ष करते हुए राजेंद्र यादव ने 'हंस' को कैसे हिंदी साहित्य की नम्बर एक पत्रिका के रूप में स्थापित किया। इसका विस्तृत वर्णन शोध-प्रबंध में है।

पंचम अध्याय : हंस और उसके विशेषांक

शोध-प्रबंध के पंचम अध्याय में 'हंस और उसके विशेषांकों' पर गहराई से प्रकाश डाला गया है। 'हंस' के जितने भी विशेषांक आये वे समाज में चर्चा और परिवर्तन के वाहक बनें। स्त्री विमर्श के अंतर्गत हंस और स्त्री के बदलते आयाम में 'औरत : उत्तरकथा- 1994' से लेकर 'स्त्री विमर्श : अगला दौर नवंबर- 2009' तक विस्तृत विवरण दिया गया है। कैसे स्त्रियां संघर्ष की बंधन और पर्दा प्रथा से बाहर आकर आज पूरी दुनिया का नेतृत्व कर रही है। समाज के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी उपस्थिति का लोहा मनवाया है। पहले उनकी दशा और दिशा कैसी थी और वर्तमान में उनकी स्थिति, दशा और दिशा कैसी है। 'हंस' के 'दलित विमर्श' जिसमें 'हंस और दलित के बदलते आयाम' में 'सत्ता विमर्श और दलित- अगस्त 2004' से लेकर 'दलित (प्रतिरोध/अधिकार/समता खण्ड- 1/2) नवंबर/दिसम्बर-

2019' तक का विवरण है। समाज में हाशिए पर जीवन व्यतीत करने को मजबूर दलित समाज को राजेन्द्र यादव ने 'हंस' के विशेषांकों के माध्यम से लोगों का ध्यान इस तरफ आकर्षित किया। जिसका बहुत फायदा दलित समाज और साहित्य को मिला। दलितों ने खुद अपनी बात अपनी लेखनी के माध्यम से कहीं। हंस के कारण दलित समाज में नए-नए लेखक मिल गए जो अपनी बात अपने तरीके से कह रहे हैं। 'हंस' और मुसलमान के बदलते आयाम शीर्षक के अंतर्गत 2003 में 'हंस' का विशेषांक 'भारतीय मुसलमान : वर्तमान और भविष्य' में मुस्लिम समाज के प्रथा, परम्परा और बंदिशों के बारे में वर्णन है। मुस्लिम समाज में खासकर महिलाओं के साथ हुए अमानवीय व्यवहार, प्रथा व परम्परा के नाम पर प्रताड़ित मुस्लिम महिलाओं के संघर्षों की कहानी उन्हीं के कलम के माध्यम से देखने और सुनने को मिला।

उपसंहार

मैं अपने शोध-प्रबंध के सभी अध्यायों के अंत में निष्कर्ष के रूप में आकलन किया है। किन्तु यहाँ उपसंहार में मैंने अपने सम्पूर्ण शोध का सार निष्कर्ष रूप में रखा है। साथ ही इसे समृद्ध बनाने के लिए क्या-क्या किया जा सकता है, इन बिन्दुओं पर भी चर्चा की है।

परिशिष्ट :

अंत में अनुक्रमणिका के अंतर्गत हमने आधार ग्रंथ, सहायक ग्रंथ, शब्दकोश, पत्र-पत्रिकाएं और वेबसाइट्स का विवरण दिया है। जिनका उपयोग मैंने अपने शोध-प्रबंध में सहायक के रूप में किया है।

अपने इस महत्वाकांक्षी शोध-प्रबंध को मैं कभी पूर्णता तक न पहुँचा पाता यदि गुरुजनों और परिजनों के आशीर्वाद और स्नेह का संबल कदम-कदम पर मेरे साथ न

होता। श्रद्धेय डॉ. मायाप्रकाश पाण्डेय सर और प्रो. शिवप्रसाद शुक्ल सर का मार्गदर्शन, सुझाव व उत्साहवर्धन और आशीषों की छाया निरंतर मेरे साथ रही। जिसके कारण मैंने यह असंभव-सा कार्य संभव व पूर्ण कर पाया।